Exchange & Finance Available
Zelo Electric Scooter
Maa Bhagwati Services & Enterprises
B. No. 23, Infront of IDBI Bank,
Neemuch 9407423966, 8770664866

मालवा फर्स्ट

MALWA FIRST

स्वाभिमान ही हमारा अभिमान है

Periodicity- Weekly

PRGI Reg. No. MPHIN/2023/90883

संपादक : ऐश्वर्य शर्मा

नीमच, बुधवार

17 जून 2026

वर्ष - 04, अंक - 07 - मूल्य 02 रूपए

पृष्ठ - 04

E-mail: nmh.pawan@gmail.com

Contact: 9407423966, 8770664866

Commodity: Gold 1,51,905 Silver 2,95,000 Crude Oil 5,963 Natural Gas 302.20 Aluminium 232.30 Copper 827.35

अब बिना डॉक्टर की पर्ची के नहीं मिलेगी कफ सीरप

नई दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने मंगलवार को एक नोटिफिकेशन जारी किया, जिसके तहत कफ सीरप समेत सीरप वाली दवाएं अब बिना डॉक्टर की पर्ची के नहीं मिलेंगी। अब ऐसी दवाएं खरीदने के लिए ग्राहकों को डॉक्टर की पर्ची की जरूरत होगी।

यह बदलाव केंद्र सरकार द्वारा 'ड्रग्स रूल्स, 1945' में 'ड्रग्स (पांचवां संशोधन) रूल्स, 2026' के जरिए संशोधन करने के बाद आया है। इस संशोधन को 9 जून को ऑफिशियल गजट में नोटिफाई किया गया था।

सरकार ने क्या संशोधन किया? - इस संशोधन के तहत ड्रग्स रूल्स, 1945 की अनुसूची K (Schedule K) के सीरियल नंबर 13 के आइटम नंबर (7) से सीरप (Syrups) शब्द को हटा दिया गया है। अनुसूची K में उन दवाओं की कैटेगरीज की लिस्ट है जिन्हें कुछ खास शर्तों के साथ ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940 के चैप्टर IV के कुछ प्रावधानों से छूट मिली हुई है। लिस्ट से सीरप को हटाने के बाद अब ऐसी दवाएं लागू रेगुलेटरी जरूरतों के दायरे में आ जाएंगी।

आम जनता से मांगा गया था सुझाव - यह संशोधन 29 दिसंबर, 2025 को जारी उस ड्राफ्ट नोटिफिकेशन के बाद किया गया है, जिसमें स्टेकहोल्डर्स और आम जनता से आपत्तियां और सुझाव मांगे गए थे। सरकार ने कहा कि फाइनल नोटिफिकेशन जारी करने से पहले ड्राफ्ट नियमों पर मिली सभी टिप्पणियों पर विचार किया गया था। नोटिफिकेशन में कहा गया, 'अब उक्त अधिनियम की धारा 12 और 33 के तहत मिली शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए केंद्र सरकार ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड से सलाह-मशविरा करने के बाद ड्रग्स रूल्स, 1945 में और संशोधन करने के लिए निम्नलिखित नियम बनाती है।'

हटाया गया सीरप शब्द - संशोधन में आगे कहा गया है, 'ड्रग्स रूल्स, 1945 में, शेड्यूल K के 'क्लास ऑफ ड्रग्स' (दवाओं की श्रेणी) वाले कॉलम में सीरियल नंबर 13 के सामने आइटम नंबर (7) से 'सीरप' शब्द हटा दिया जाएगा।'

यह नोटिफिकेशन 'ड्रग्स टेक्निकल एडवाइजरी बोर्ड' से सलाह-मशविरे के बाद जारी किया गया था। 'ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट, 1940' के तहत बनाए गए 'ड्रग्स रूल्स, 1945' भारत में दवाओं के निर्माण, बिक्री और वितरण को रेगुलेट करते हैं।

सभी होटल, रेस्टोरेंट, मेरिज गार्डन संचालक फायर सेफ्टी मॉकड्रील अवश्य कर लें- श्री चंद्रा

नीमच । जिले के सभी होटल, रेस्टोरेंट एवं मेरिज गार्डन संचालक फायर सेफ्टी ऑडिट एवं मॉकड्रील अवश्य करवाए। मॉकड्रील में जो भी कमी पाई जाए, उनका सुधार अवश्य सुनिश्चित करें। जिले में संचालित ढाबों पर भी कोई अवैधानिक गतिविधियां ना हो, यह सुनिश्चित करें। ढाबो में लगे सीसीटीवी कैमरों से ढाबों के बाहर, मुख्य सड़क के आवागमन का फुटेज भी रिकार्ड हो, ऐसी व्यवस्था करें। यह निर्देश कलेक्टर श्री हिमांश चंद्रा ने सोमवार को कलेक्टोरेट सभाकक्ष नीमच में आयोजित रेस्टोरेंट, मेरिज गार्डन संचालकों की बैठक में दिए।

बैठक में निर्देश दिए, कि सभी होटल संचालक, रेस्टोरेंट एवं मैरिज गार्डन में सुरक्षित प्रवेश और सुरक्षित निकासी की व्यवस्था हो।आपात स्थिति में निकासी के लिए वैकल्पिक व्यवस्था भी रहे, यह सभी संचालक सुनिश्चित करें। साथ ही होटल रेस्टोरेंट, मेरिज गार्डन के बाहर वाहनों की पार्किंग की पर्याप्त व्यवस्था सुनिश्चित हो। सड़क पर वाहन पार्किंग ना हो, यातायात में कोई व्यवधान ना हो यह सुनिश्चित करें।

बैठक में कलेक्टर ने सभी होटल रेस्टोरेंट संचालकों को निर्देश दिए, कि वे खाद्य सुरक्षा मानकों का अक्षरशः पालन करें और ग्राहकों को अच्छी गुणवत्ता की खाद्य सामग्री ही उपलब्ध करवाए संस्थान में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखे। कलेक्टर ने विद्युत सुरक्षा के मानकों का पालन करने पुरानी विद्युत लाईन फिटिंग, ए.सी. व अन्य विद्युत उपकरणों को चेक करवाकर आवश्यकता के अनुसार सुधार करवाने के निर्देश भी दिए।

बैठक में पुलिस अधीक्षक श्री राजेश व्यास ने कहा, कि सभी होटल संचालक, रेस्टोरेंट में आंगतुकों ठहरने वालों की आईडी व रिकार्ड सुव्यवस्थित तरीके से संधारित करें तथा यदि कोई संदिग्ध व्यक्ति उनके प्रतिष्ठान में ठहरता है, तो उसकी सूचना पुलिस को अवश्य दे। एसपी ने कहा, कि विदेशी आंगतुकों की सूचना निर्धारित सी फार्म में भरवाकर संबंधि पुलिस थानों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवाई जाए। बैठक में होटल, मेरिज गार्डन, रेस्टोरेंट, ढाबा संचालकों ने भी अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिए । बैठक में एडीएम श्री बी.एस. कलेश, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुश्री हेमलता अग्रवाल, एसडीएम श्री पराग जैन व अन्य जिला अधिकारी उपस्थित थे।

जनभागीदारी, नवाचार और संवेदनशील प्रशासन की नई पहचान बन रहा नीमच

वरिष्ठ पत्रकार ऐश्वर्य शर्मा से विशेष बातचीत में कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने साझा की जिले के विकास और जनकल्याण की प्राथमिकताएं

नीमच (ऐश्वर्य शर्मा)। जिले में प्रशासन को आमजन से सीधे जोड़ने, विकास कार्यों को गति देने और शासन की योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के उद्देश्य से जिल प्रशासन लगातार नवाचार कर रहा है। नीमच कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के नेतृत्व में कई ऐसे प्रयास हुए हैं, जिनकी चर्चा जिले के गांवों से लेकर शहर तक हो रही है। वरिष्ठ पत्रकार एव मालवा फर्स्ट समाचारपत्र के संपादक ऐश्वर्य शर्मा से विशेष बातचीत में कलेक्टर ने जिले में चल रहे विभिन्न नवाचारों, विकास कार्यों और आगामी योजनाओं की जानकारी साझा की।

◆ **सवाल** : जिले में महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से किस प्रकार के प्रयास किए जा रहे हैं?

◆ जवाब : महिला एवं बाल विकास विभाग के माध्यम से बच्चों के पोषण, महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आंगनवाड़ी केंद्रों की गतिविधियों की नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है। कुपोषण मुक्ति, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य तथा महिलाओं को विभिन्न सरकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए विभाग लगातार बेहतर कार्य कर रहा है। हमारा उद्देश्य है कि कोई भी पात्र हितग्राही योजना के लाभ से वंचित न रहे।

◆ **सवाल** : पूर्व में गांव-गांव में आयोजित विभागीय संयुक्त शिविरों को लोगों ने काफी सराहा। इसका क्या परिणाम रहा?

◆ **जवाब** : संयुक्त शिविरों का सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि प्रशासन सीधे जनता तक पहुंचा। पहले लोगों को अलग-अलग विभागों के कार्यालयों के चक्कर लगाने पड़ते थे, लेकिन शिविरों के माध्यम से कई विभाग एक ही स्थान पर उपलब्ध रहे। इससे लोगों की समस्याओं का मौके पर समाधान हुआ और प्रशासन तथा जनता के बीच विश्वास का रिश्ता मजबूत हुआ। भविष्य में भी इस प्रकार के प्रयास जारी रहेंगे।

◆ **सवाल** : जिले में सड़क एवं इंफ्रास्ट्रक्चर विकास को लेकर क्या प्राथमिकताएं हैं?

◆ **जवाब** : सड़क और आधारभूत संरचना किसी भी क्षेत्र के विकास की रीढ़ होती है। जिले में विभिन्न सड़क परियोजनाओं, पुल-पुलियाओं और अन्य निर्माण कार्यों पर विशेष फोकस किया जा रहा है। मैं स्वयं निरीक्षण कर उनकी गुणवत्ता का जायजा कर आवश्यक दिशा निर्देश जारी करता हूँ। हमारा प्रयास है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में बेहतर कनेक्टिविटी उपलब्ध हो ताकि नागरिकों को आवागमन में सुविधा मिले और आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिले।

◆ **सवाल** : शिक्षा के क्षेत्र में जिले का प्रदर्शन लगातार बेहतर हुआ है। इसके पीछे क्या रणनीति रही?

◆ **जवाब** : शिक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है। स्कूलों की नियमित मॉनिटरिंग, शिक्षकों के साथ संवाद और विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने की रणनीति अपनाई गई। इसका सकारात्मक परिणाम यह रहा कि बोर्ड परीक्षाओं में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। हमारा प्रयास केवल परीक्षा परिणाम तक सीमित नहीं है बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराना भी है ।

◆ **सवाल** : खाद्य पदार्थों में मिलावट के खिलाफ प्रशासन की कार्रवाई लगातार चर्चा में रही है।

◆ **जवाब** : आमजन के स्वास्थ्य के साथ किसी भी प्रकार का समझौता नहीं किया जा सकता। इसी दृष्टिकोण से होटल, रेस्टोरेंट, मिठाई दुकानों और खाद्य प्रतिष्ठानों की नियमित जांच की जा रही है। जहां भी मिलावटी, एक्सपायरी अथवा अमानक खाद्य सामग्री मिली है, वहां सख्त कार्रवाई की गई है। यह अभियान आगे भी लगातार जारी रहेगा ताकि नागरिकों को सुरक्षित खाद्य सामग्री उपलब्ध हो सके।

◆ **सवाल** : आपकी रात्रि चौपालों की काफी चर्चा रही है। इसका उद्देश्य क्या है?

◆ **जवाब** : प्रशासन को जनता के बीच जाना चाहिए। इसी सोच के साथ शासन के निर्देशानुसार रात्रि चौपालों की शुरुआत की गई। हम बस के माध्यम से गांवों तक पहुंचे, ग्रामीणों के बीच बैठकर भोजन किया और उनकी समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से सुना। इससे लोगों को अपनी बात रखने का अवसर मिला और अधिकारियों को भी जमीनी स्थिति समझने में मदद मिली। कई समस्याओं का मौके पर ही समाधान किया गया।

◆ **सवाल** : उद्यानिकी विभाग की पीएमएफएमई योजना को लेकर क्या विशेष प्रयास किए जा रहे हैं?

◆ **जवाब** : प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्योग उन्नयन योजना (PMFME) ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली महत्वपूर्ण योजना है। जिले में इसका प्रभावी क्रियान्वयन किया जा रहा है। हमारा लक्ष्य है कि अधिक से अधिक युवाओं, महिलाओं और किसानों को इससे जोड़कर उन्हें स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएं। आने वाले समय में ग्राम पंचायत स्तर तक इस योजना का विस्तार कर सफल उद्यमी तैयार करने की दिशा में काम किया जाएगा।

◆ **सवाल** : जनसुनवाई में स्कूली विद्यार्थियों को आवेदन लिखवाने का प्रयोग काफी अनोखा रहा ।

◆ **जवाब** : यह केवल प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं थी बल्कि एक शैक्षणिक गतिविधि भी थी। विद्यार्थियों को आवेदन पत्र लिखने, अपनी समस्या को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करने और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को समझने का अवसर मिला। बच्चों के अनुभव काफी सकारात्मक रहे। इससे उनमें जागरूकता और आत्मविश्वास दोनों बढ़े हैं।

◆ **सवाल** : आगामी समय में राजस्व मामलों के त्वरित समाधान के लिए क्या योजना है?

◆ **जवाब** : बहुत जल्द गांव-गांव में राजस्व शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन शिविरों में पुलिस विभाग सहित अन्य संबंधित विभागों का भी सहयोग रहेगा। भूमि विवाद, सीमांकन, नामांतरण और अन्य राजस्व प्रकरणों का त्वरित निराकरण प्राथमिकता रहेगा। हमारा उद्देश्य है कि लोगों को छोटी-छोटी समस्याओं के लिए बार-बार कार्यालयों के चक्कर न लगाने पड़ें।

◆ **सवाल** : निजी विद्यालयों की मनमानी और नियमों के उल्लंघन को लेकर प्रशासन का क्या रुख है?

◆ **जवाब** : शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार की अनियमितता स्वीकार नहीं की जाएगी। कुछ निजी विद्यालय यदि निर्धारित मापदंडों और नियमों की अनदेखी कर रहे हैं तो उनके विरुद्ध नियमानुसार सख्त कार्रवाई की तैयारी की जा रही है। विद्यार्थियों और अभिभावकों के हितों की रक्षा प्रशासन की जिम्मेदारी है और इसमें किसी भी प्रकार की ढिलाई नहीं बरती जाएगी।

◆ **सवाल** : जिले की आस्था और पर्यटन से जुड़े महत्वाकांक्षी महामाया भादवामाता लोक की वर्तमान स्थिति क्या है?

◆ **जवाब** : नीमच जिले की आस्था भादवामाता मंदिर जो उज्जैन के महाकाल लोक की तर्ज के रूप में विकसित होना है। महामाया लोक के निर्माण के कार्य को गति से करवाया जा रहा है। अच्छी गुणवत्ता के साथ इसका काम किया जा रहा है। जल्द से जल्द इसे और गति दी जाएगी और कार्यपूर्ण करवाया जा रहा है।

संवेदनशील प्रशासन और नवाचार आधारित कार्यशैली

विशेष बातचीत के दौरान यह स्पष्ट दिखाई दिया कि कलेक्टर हिमांशु चंद्रा की कार्यशैली केवल कार्यालयों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे प्रशासन को सीधे जनता तक पहुंचाने में विश्वास रखते हैं। रात्रि चौपाल, संयुक्त विभागीय शिविर, विद्यार्थियों को जनसुनवाई से जोड़ना, खाद्य सुरक्षा पर सख्ती, शिक्षा सुधार और ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने जैसे प्रयास प्रशासन की जनकेंद्रित सोच को दर्शाते हैं। नीमच जिला प्रशासन द्वारा विकास, पारदर्शिता और जनसहभागिता के जिस मॉडल पर कार्य किया जा रहा है, वह आने वाले समय में जिले के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल सकता है। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा के नेतृत्व में प्रशासनिक नवाचारों और संवेदनशील पहल का यह क्रम लगातार आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है।

एमपी के 55 जिलों की बदलेगी तस्वीर, बन रहे हैं 6 नए कॉरिडोर, आपके जिले को कैसे होगा फायदा ?

भोपाल। मध्य प्रदेश की सड़कों पर रफ्तार और विकास का एक नया अध्याय शुरू होने जा रहा है। सूबे के सभी 55 जिलों की तस्वीर बदलने और उनके बीच की दूरी को कम करने के लिए सरकार एक मेगा इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट पर काम कर रही है। राज्य में 6 नए इकोनॉमिक कॉरिडोर (आर्थिक गलियारे) तैयार किए जा रहे हैं, जो करीब 3,300 किलोमीटर लंबे होंगे। लगभग 36,483 करोड़ रुपये के भारी-भरकम बजट से बनने वाले इन एक्सप्रेस-वे ग्रिड का निर्माण कार्य साल 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

यह महापरियोजना न केवल सफर को आसान बनाएगी, बल्कि विंध्य, बुंदेलखंड, मालवा-निमाड़ और नर्मदा अंचल की आर्थिक रीढ़ को भी मजबूत करेगी। बालाघाट से बैतुल तक और बिलासपुर-रायपुर से होते हुए गुजरात सीमा तक कनेक्टिविटी का यह जाल प्रदेश के औद्योगिक और व्यापारिक विकास को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा। आइए जानते हैं कि मध्य प्रदेश को रफ्तार देने वाले ये छह इकोनॉमिक कॉरिडोर कौन से हैं और इनसे प्रदेश को क्या लाभ होगा:

1. मालवा-निमाड़ विकासपथ (कुल लंबाई: 450 किमी) - मालवा और निमाड़ अंचल को आर्थिक रूप से और समृद्ध बनाने के लिए इस कॉरिडोर को 7,972 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया जा रहा है। इसके तहत गरोठ से उज्जैन के बीच 136 किलोमीटर और इंदौर से बुरहानपुर के बीच 215 किलोमीटर का रूट शामिल है। साल 2027 तक पूरा होने वाला यह मार्ग मंदसौर, उज्जैन, इंदौर, खंडवा और बुरहानपुर जैसे प्रमुख व्यावसायिक केंद्रों को सीधे जोड़ेगा।

2. विंध्य एक्सप्रेस-वे (कुल लंबाई: 676 किमी) - करीब 3,809 करोड़ रुपये के बजट से बनने वाला यह एक्सप्रेस-वे राजधानी भोपाल से शुरू होकर प्रदेश के 10 जिलों से गुजरेगा। इसमें सागर, दमोह, कटनी और रीवा जैसे बड़े शहर शामिल हैं। इसके पूरी तरह चालू हो जाने के बाद भोपाल से रीवा और ऊर्जा धानी सिंगरौली तक का सफर बेहद आसान और बेहद कम समय में तय होने लगेगा।

3. बुंदेलखंड विकासपथ (कुल लंबाई: 330 किमी) - बुंदेलखंड क्षेत्र के पिछड़ेपन को दूर करने और स्थानीय रोजगार को बढ़ावा देने के लिए यह 330 किलोमीटर लंबा कॉरिडोर बनाया जा रहा है। लगभग 3,357 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला यह पथ भोपाल, रायसेन, विदिशा, सागर और छतरपुर को आपस में जोड़ेगा, जिससे पर्यटन और व्यापार दोनों को रफ्तार मिलेगी।

4. अटल प्रगतिपथ (कुल लंबाई: 299 किमी) - चंबल अंचल के विकास को रफ्तार देने के लिए 299 किलोमीटर लंबे अटल प्रगतिपथ की रूपरेखा तैयार की गई है। यह कॉरिडोर दिल्ली-मुंबई इंडस्ट्रियल कॉरिडोर से शुरू होकर बुंदेलखंड कॉरिडोर से जाकर मिल जाएगा। इससे श्योपुर, मुरैना और भिंड जैसे चंबल के जिलों को सीधा फायदा होगा और यहां नए उद्योगों के रास्ते खुलेंगे।

5. नर्मदा प्रगतिपथ (कुल लंबाई: 867 किमी) - नर्मदा नदी के समानांतर बनने वाला यह कॉरिडोर इस पूरी योजना का सबसे लंबा (867 किलोमीटर) हिस्सा है। यह मार्ग झाबुआ, धार, इंदौर, देवास, सीहोर, रायसेन, नरसिंहपुर, जबलपुर और डिंडौरी जैसे जिलों को एक सूत्र में पिरोएगा। इसकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह छत्तीसगढ़ के रायपुर और बिलासपुर को मध्य प्रदेश के रास्ते सीधे गुजरात की सीमाओं से जोड़ देगा।

6. मध्यभारत विकासपथ (कुल लंबाई: 746 किमी) - यह कॉरिडोर विशेष रूप से मध्य प्रदेश की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहरों को दुनिया के सामने लाने के लिए डिजाइन किया गया है। 746 किलोमीटर लंबा यह मार्ग भीमबैठका, भोजपुर, सांची, उदयगिरी, चंदेरी, ओरछा और दतिया जैसे विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों को जोड़ेगा। इसके अलावा, इस कॉरिडोर के जरिए मुरैना से लेकर बैतुल तक सीधी और निर्बाध कनेक्टिविटी मिल सकेगी।

तंबाकू, नशे का बदलता स्वरूप और आधुनिक दौर की चुनौती

(लेखक-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी)

आजतक राजनीतिक सामाजिक या व्यक्तिगत संगठनों द्वारा तंबाकू व नशीली चीजों के विरुद्ध उग्र आंदोलन क्यों नहीं चलाया यह विचारणीय प्रश्न ?क्या हम एक मूक सामूहिक हत्या के मूकदर्शक बने हुए हैं?

तंबाकू निषेध दिवस 31 मई 2026 मनाने क़े साथ शासन प्रशासन विद्यालयों, महाविद्यालयों, पंचायतों,नगर निकायों,सामाजिक संगठनों, धार्मिक संस्थाओं, चिकित्सक समुदाय,मीडिया और राजनीतिक दलों को साथ मिलकर सशक्त राष्ट्रव्यापी उग्र तंबाकू निषेध आंदोलन चलाने की जरूरत?

तंबाकू निषेध नशा मुक्त भारत- अगर भ्रष्टाचार,आरक्षण, नागरिकता, कृषि कानून, क्षेत्रीय पहचान या सामाजिक न्याय के प्रश्न राष्ट्रीय बहस और जनआंदोलन का विषय बन सकते हैं, तो नशा मुक्त संपूर्ण क्रांति आंदोलन क्यों नहीं बना? वैश्विक स्तरपर हर वर्ष 31 मई को पूरी दुनियाँ में वर्ल्ड नों टोबैक्को अर्थात विश्व तंबाकू निषेध दिवस मनाया जाता है। हर वर्ष इस अवसर पर भाषण होते हैं, शपथ ली जाती है, पोस्टर लगाए जाते हैं और तंबाकू के दुष्परिणामों पर चर्चा होती है।लेकिन एक कड़वा प्रश्न आज हमारे सामने खड़ा है,क्या केवल एक दिन का यह प्रतीकात्मक आयोजन उस भयावह महामारी को रोक सकता है जो प्रतिदिन लाखों लोगों के शरीर में कैंसर, हृदय रोग, स्ट्रोक और फेफड़ों की घातक बीमारियों का जहर घोल रही है? भारत जैसे विशाल लोकतांत्रिक देश में नागरिकता कानून,आरक्षण,भ्रष्टाचार,किसानों की समस्याएं,भाषा विवाद, जल-जंगल-जमीन के प्रश्न, मंडल -कमंडल की राजनीति, जनलोकपाल आंदोलन, महिला सुरक्षा, पर्यावरण संरक्षण, महंगाई, बेरोजगारी और क्षेत्रीय अस्मिता जैसे मुद्दे बड़े जनांदोलनों का रूप ले चुके हैं।सड़कों पर लाखों लोग उतरते हैं,संसद और विधान सभाओं में बहस होती है, सरकारें झुकती हैं और नीतियां बदलती हैं।परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र इस आर्टिकल का माध्यम से शासन प्रशासन व समाज से पूछना चाहता हूं कि तंबाकू, जो हर वर्ष लाखों परिवारों को उजाड़ देता है, आज भी उतना बड़ा राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन क्यों नहीं बन पाया? जब किसी परिवार का कमाने वाला सदस्य तंबाकूजनित कैंसर से मरता है, जब किसी बच्चे का पिता गुटखा या सिगरेट के कारण असमय दुनियाँ छोड़ देता है, जब किसी मां की आंखों के सामने उसका जवान बेटा निकोटीन की लत का शिकार होकर जीवन हार जाता है, तब यह केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं रह जाती,बल्कि यह राष्ट्रीय चिंता का विषय बन जाती है। मेरे अपने एक निकट संबंधी की मृत्यु भी तंबाकूजनित कैंसर के कारण हुई। ऐसे हजारों-लाखों परिवारों का दर्द यह संकेत देता है कि अब तंबाकू निषेध को केवल स्वास्थ्य अभियान नहीं बल्कि एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आंदोलन का रूप देने की आवश्यकता है।

साथियों बात अगर हम तंबाकू व नशीली चीजों के खिलाफ़ बहुत बड़े आंदोलन की करें तो तंबाकू निषेध आंदोलन को इस तरह के आंदोलन समक़क्ष बनाने की जरूरत है जैसे भारतीय लोकतंत्र का इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जब किसी मुद्दे को जनआंदोलन का रूप मिला, तब उसने सरकारों की नीतियों,कानूनों और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित किया। वर्ष 1974 का जेपी आंदोलन (संपूर्ण क्रांति आंदोलन), वर्ष 1990 का मंडल आयोग आरक्षण आंदोलन 1980 और 1990 के दशक का राम जन्मभूमि आंदोलन,वर्ष 2011 का अन्ना हजारे के नेतृत्व वाला भ्रष्टाचार विरोधी जनलोकपाल आंदोलन, वर्ष 2019- 20 का नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) विरोधी आंदोलन, वर्ष 2020-21 का कृषि कानूनों के विरुद्ध किसान आंदोलन, वर्ष 2015 और उसके बाद विभिन्न राज्यों में हुए पटीदार आरक्षण आंदोलन,जाट आरक्षण आंदोलन, मराठा आरक्षण आंदोलन, गुर्जर आरक्षण आंदोलन तथा हाल के वर्षों में विभिन्न राज्यों में जातीय, सामाजिक और क्षेत्रीय पहचान से जुड़े आंदोलनों ने यह सिद्ध किया है कि संगठित जनदबाव लोकतांत्रिक व्यवस्था में परिवर्तन का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।इन आंदोलनों ने न केवल राजनीतिक विमर्श को प्रभावित किया बल्कि सरकारों को अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करने के लिए भी बाध्य किया। आज 30 मई 2026 से महाराष्ट्र में शुरू हुआ मनोहर जरॉंगे का मराठा आरक्षण आंदोलन सहित देश के अनेक हिस्सों में सामाजिक, जातीय और आरक्षण से जुड़े आंदोलन लगातार सुर्खियों में हैं, जो यह दर्शाते हैं कि जनता जब किसी विषय को अपने अस्तित्व, अधिकार या भविष्य से जोड़ लेती है तो वह एक विशाल जनशक्ति का रूप धारण कर लेता है। तो फिर तंबाकू व नशीली चीजों के विरुद्ध ऐसा आंदोलन किसी राजनीतिक सामाजिक या व्यक्तिगत संगठन में क्यों नहीं उठाया है यह विचारणीय प्रश्न है?

साथियों, पिछले एक दशक में नशे का स्वरूप तेजी से बदला है। कभी बीड़ी, सिगरेट और तंबाकू की पुड़िया तक सीमित रहने वाला यह कारोबार अब अत्याधुनिक तकनीक के आवरण में युवाओं के सामने प्रस्तुत किया जा रहा है। ई- सिगरेट, वेप्स, निकोटीन पॉड्स, फ्लेवर्ड हुक्के, निकोटीन पाउच और विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक धूम्रपान उपकरण आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक के रूप में प्रचारित किए जा रहे हैं। तंबाकू उद्योग ने समझ लिया है कि यदि उसे नई पीढ़ी को अपने जाल में फंसाना है तो उत्पाद का स्वरूप बदलना होगा। इसलिए आज कई वेपिंग उपकरण पेन ड्राइव, स्मार्ट गैजेट, इलेक्ट्रॉनिक पेन या स्टाइलिश एक्सेसरी जैसे दिखाई देते हैं। किशोर और युवा इन्हें आधुनिकता, स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक समझने लगते हैं। चॉकलेट, स्ट्रॉबेरी, ब्लूबेरी, वनीला, मिंट और अन्य आकर्षक फ्लेवर के माध्यम से निकोटीन को मीठे जहर के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।यह रणनीति केवल व्यापारिकनहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक भी है,क्योंकि स्वाद और आकर्षण के माध्यम से लत को आसान बनाया जाता है।

साथियों, सबसे चिंताजनक बात यह है कि इन आधुनिक उत्पादों को अक्सर पारंपरिक सिगरेट से कम हानिकारक बताने का भ्रम फैलाया जाता है।अनेक युवा यह मान लेते हैं कि वेपिंग सुरक्षित है,जबकि वैज्ञानिक अध्ययनों ने संकेत दिया है कि ई-सिगरेट से निकलने वाला एयरोसोल निकोटीन सहित अनेक हानिकारक रसायनों से भरा होता है। निकोटीन स्वयं अत्यधिक नशे की लत पैदा करने वाला पदार्थ है। इसके अतिरिक्त कई उपकरणों में प्रयुक्त धातुओं, रसायनों और अन्य तत्वों के दीर्घकालिक प्रभाव अभी भी शोध का विषय हैं। इसलिए यह कहना कि आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक धूम्रपान पूरी तरह सुरक्षित है, वैज्ञानिक दृष्टि से उचित नहीं होगा।वास्तव में यह नशे का नया मुखौटा है,जिसका उद्देश्य युवाओं को आकर्षित करना और बाजार का विस्तार करना है।तंबाकू और निकोटीन की इस महामारी का सबसे भयावह पक्ष यह है कि इसका शिकार केवल सेवन करने वाला व्यक्ति ही नहीं होता।पैसिव स्मोकिंग या अप्रत्यक्ष धूम्रपान उन लाखों निर्दोष लोगों की जान ले रहा है जिन्होंने कभी सिगरेट या तंबाकू को हाथ तक नहीं लगाया। घरों, कार्यालयों, रेस्तरां, सार्वजनिक स्थलों और वाहनों में छोड़ा गया धुआं आसपास मौजूद लोगों के शरीर में प्रवेश करता है।बच्चों, गर्भवती महिलाओं, बुजुर्गों और कमजोर स्वास्थ्य वाले व्यक्तियों पर इसका प्रभाव और भी गंभीर होता है। जब कोई व्यक्ति सार्वजनिक स्थान पर धूम्रपान करता है तो वह केवल अपने स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुंचाता, बल्कि दूसरों के स्वास्थ्य अधिकारों का भी उल्लंघन करता है। यही कारण है कि पैसिव स्मोकिंग को केवल व्यक्तिगत व्यवहार का प्रश्न नहीं बल्कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक उत्तरदायित्व का विषय माना जाता है।

साथियों, कई विशेषज्ञों का मानना है कि पैसिव स्मोकिंग के कारण होने वाली मौतों को केवल दुर्घटना याव्यक्तिगत दुर्भाग्य नहीं कहा जा सकता। यह ऐसी स्थिति है जिसमें निर्दोष लोग दूसरों की आदतों के कारण बीमारी औरमृत्यु का शिकार बनते हैं। धुएं में हजारों प्रकार के रसायन पाए जाते हैं, जिनमें अनेक कैंसरकारी तत्व भी शामिल हैं। यही कारण है कि विश्वभर में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान प्रतिबंध संबंधी कानून बनाए गए हैं। लेकिन कानून तभी प्रभावी होते हैं जब उनका कठोर और ईमानदार क्रियान्वयन हो। भारत में भी कई स्थानों पर धूम्रपान निषेध के नियम हैं, परंतु उनका पालन अभी भी चुनौती बना हुआ है।

साथियों, यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण है कि तंबाकू विरोधी संघर्ष आज तक एक बड़े जनांदोलन का रूप क्यों नहीं ले पाया। इसका पहला कारण यह है कि तंबाकू तत्काल मृत्यु नहीं देता। सड़क दुर्घटना,हिंसा या प्राकृतिक आपदा की तरह इसका प्रभाव अचानक दिखाई नहीं देता। यह धीरे-धीरे शरीर को भीतर से नष्ट करता है। कैंसर, हृदय रोग और फेफड़ों की बीमारियां वर्षों में विकसित होती हैं। इसलिए जनता का आक्रोश कभी एक साथ विस्फोटक रूप में सामने नहीं आता। दूसरा कारण तंबाकू उद्योग का विशाल आर्थिक ढांचा है। खेती, उत्पादन, वितरण और कर राजस्व से जुड़े अनेक हित इसमें शामिल रहते हैं। तीसरा कारण सामाजिक स्वीकृति है। कई लोग तंबाकू सेवन को व्यक्तिगत पसंद का विषय मानते हैं, जबकि इसका प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है। चौथा कारण जागरूकता और क्रियान्वयन के बीच की दूरी है। कानून मौजूद हैं, चेतावनियां मौजूद हैं, लेकिन व्यवहार परिवर्तन अपेक्षित स्तर पर नहीं हो पाया है।

साथियों, भारत में तंबाकू और अन्य नशे के नियंत्रण की जिम्मेदारी केवल स्वास्थ्य विभाग की नहीं है।इसमेंपुलिस विभाग, राज्य आबकारी विभाग,स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग,शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, नारकोटिक्स नियंत्रण एजेंसियां, स्थानीय निकाय, जिला प्रशासन और विभिन्न नियामक संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस प्रकार अवैध शराब से मौतों के मामलों में कई राज्यों में संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाती रही है, उसी प्रकार तंबाकू नियंत्रण कानूनों के प्रभावी पालन को लेकर भी जवाबदेही तय करने की आवश्यकता महसूस की जाती है। जब किसी क्षेत्र में खुलेआम प्रतिबंधित उत्पाद बिकते हैं,जब स्कूलों के आसपास तंबाकू की बिक्री होती है या जब सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान रोकने के नियम लागू नहीं होते, तब केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं माना जा सकता। प्रभावी निगरानी, नियमित निरीक्षण, जनभागीदारी और उत्तरदायित्व की स्पष्ट व्यवस्था आवश्यक है। साथियों, आज की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि नई पीढ़ी नशे को आधुनिकता और स्टेटस सिंबल के रूप में देखने लगी है। सोशल मीडिया,फिल्मों, डिजिटल संस्कृति और समूह दबाव के कारण कई किशोर यह मान बैठते हैं कि वेपिंग या धूम्रपान उन्हें अधिक आकर्षक, परिपक्व या आधुनिक बनाता है।वास्तविकता इसके ठीक विपरीत है। चिकित्सा विज्ञान यह संकेत देता है कि निकोटीन की लत मस्तिष्क के विकास को प्रभावित कर सकती है, विशेषकर किशोरावस्था में। कुछ मामलों में ई-सिगरेट से जुड़ी गंभीर फेफड़ों की बीमारियों की भी रिपोर्ट सामने आई हैं, जिन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशेष चिकित्सीय श्रेणियों में अध्ययन किया गया है। यह स्पष्ट है कि आधुनिक नशे का आकर्षक आवरण उसके भीतर छिपे जोखिमों को समाप्त नहीं करता।इसलिए अब आवश्यकता केवल जागरूकता की नहीं बल्कि सामाजिक चेतना के व्यापक पुनर्जागरण की है। स्कूलों और कॉलेजों में नशा विरोधी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

संपादकीय

जन के हित के हेत

भले ही हिंदी पत्रकारिता गफलत में अपनी पहली शताब्दी न मना सकी हो, लेकिन वह द्विशताब्दी के मौके पर खासी उत्साहित है। वह आत्ममंथन के दौर से गुजर रही है। आज से दो सौ साल पहले उत्तर भारत से जाकर तत्कालीन कलकत्ता को कर्मभूमि बनाने वाले पं. युगल किशोर शुक्ल ने 'उदन्त मार्तण्ड' के रूप में हिंदी पत्रकारिता का बीजारोपण किया था। भले ही वह पत्र आर्थिक झंझावातों से अधिक समय तक न चल सका, लेकिन अपनी 'आदि प्रतिज्ञा' से वह जो पत्रकारिता का लक्ष्य तय कर गया, वह आज भी उतना ही जरूरी व प्रासंगिक है। 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रवेशांक में पं. शुक्ल ने लिखा था कि इस समाचार पत्र का प्रकाशन- 'हिंदुस्तानियों के हित के हेत' .. किया जा रहा है। निस्संदेह, ध्येय वाक्य के गहरे निहितार्थ थे और आज भी हैं। सही मायने में पत्र ने दो सदी पहले पत्रकारों को उनका 'कर्मपथ' बता दिया था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि जबकि यह हिंदी भाषा का समाचार पत्र था, लेकिन उसकी फिक्र केवल हिंदी भाषियों की ही नहीं थी। उसकी 'आदि प्रतिज्ञा' समस्त हिंदुस्तानी समाज के हित को लेकर थी। पत्र का नाम 'उदन्त मार्तण्ड' यानी उगता सूरज था। बाकायदा समाचार पत्र के नाम के साथ संस्कृत में लिखा होता था कि जैसे सूरज के प्रकाश के बिना अंधेरा दूर नहीं होता, उसी तरह अज्ञ जन समाचार पत्र के बिना ज्ञानवान नहीं बन सकते। यह भी कि ज्ञान के प्रकाश को फैलाने के मकसद से इस समाचार पत्र का प्रकाशन किया जा रहा है। निश्चय ही उदन्त मार्तंड की 'आदि प्रतिज्ञा और धेय' में सभी भाषाओं की पत्रकारिता का लक्ष्य आज भी यही है। निश्चय ही यह पत्रकारिता बिरादरी को आईना दिखाता है कि हमारी पत्रकारिता हर हिंदुस्तानी के हित के हेत है? क्या हम हम समाज में अज्ञ को ज्ञानवान बनाने का काम कर रहे हैं? क्या हमारे शब्द उतने ही अर्थवान व सारवान हैं, जितना इस पेशे से अपेक्षित है। निश्चय ही यह अवसर पत्रकारिता बिरादरी को आत्ममंथन का मौका देता है। हिंदी पत्रकारिता के प्रतीक पुरुष स्व. प्रभाष जोशी ने एक बार पत्रकारिता के छात्रों से बातचीत करते हुए कहा था कि पत्रकारिता 'ऋषिकर्म' है। जिसमें घर फूंक तमाशा देखने का जज्बा हो, वही पत्रकारिता में आए। पैसे कमाने के लिये तमाम पेशे हैं। साथ ही यह भी कि किसी डेढ़ पेज की प्रेस विज्ञप्ति में यदि कोई डेढ़ लाइन की खबर निकाल सके, तो वही असली पत्रकार है। बाकी सब विज्ञापन है। लेकिन विडंबना यह है कि आज विश्वविद्यालयों से निकलने वाले पत्रकारिता के छात्रों में बिरले ही ऐसे होते हैं, जो वेतन, पैकेज व पद के सम्मोहन से मुक्त होकर मिशनरी पत्रकारिता का जज्बा रखते हों। आज पत्रकारिता के नवसाक्षरों की बड़ी फौज पत्रकारिता के ग्लैमर व प्रसिद्धि के प्रलोभन में इस पेशे में आती है। उसे आजादी की लड़ाई में सर्वस्व अर्पित करने वाले 'स्वराज' अखबार का शायद ही भान हो, जिसके ढाई वर्ष के अल्पकाल में संपादकों को डेढ़ सौ साल की सजाएं हुईं। लेकिन उसके बावजूद संपादक पद के लिये विज्ञापन देने पर जज्बे के पत्रकारों की लाइन लग जाती थी। निश्चित रूप से पत्रकारिता जीवन मूल्यों की शुचिता व सामाजिक दायित्वों का पेशा है। यह विशुद्ध कारोबार या व्यवसाय नहीं हो सकता है। विडंबना यह है कि तकनीकी क्रांति के बाद जब से बड़ी पूंजी की समाचारों के प्रकाशन में दखल बढ़ी है, तब से संपादक नामक संस्था क्षीण हुई है और पूंजीपति की दखल में वृद्धि हुई है। पिछली सदी में एक दिग्गज संपादक की वह टिप्पणी आज भी प्रासंगिक है कि 'भविष्य के अखबार रूप-रंग व प्रकाशन में तो आकर्षक होंगे, लेकिन उनमें पत्रकारिता की आत्मा न होगी।'

विचार मंथन

(लेखक- सनत जैन)

देश की सबसे बड़ी प्रतियोगी परीक्षाओं में शामिल नीट को लेकर एक बार फिर विवाद गहरा गया है। पिछले तीन वर्षों से नीट परीक्षा का प्रश्नपत्र लीक होने की बात सामने आती रही है। इसमें लाखों परीक्षार्थी शामिल होते हैं। परीक्षा केंद्रों पर अनियमितताएँ और लाखों छात्रों के भविष्य पर मंडराते संकट के बीच अब सरकार सेना और वायुसेना की सहायता लेने की खबर आई है। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय और नीट परीक्षा आयोजित करने वाली संस्था प्रश्नपत्रों के सुरक्षित परिवहन और निगरानी के लिए सरकार सैन्य संसाधनों का उपयोग करने जा रही है। इसके पहले कभी भी सेना का उपयोग इस तरह से नहीं हुआ है। पिछले 75 वर्षों के इतिहास में जब कानून व्यवस्था की स्थिति में बहुत जरूरत होने पर ही सेना को कुछ समय के लिए तैनात किया जाता है। पहली बार परीक्षा मे सेना और वायु सेना का उपयोग होने की बात सामने आ रही है। यह निर्णय दो तरह के प्रश्न खड़े करता है। पहला, क्या सरकार की नीट की परीक्षा के प्रश्न पत्र बार-बार लीक हो रहे हैं, उसकी

गंभीरता और
दूसरा, क्या
और परीक्षा
परीक्षा एजें
विफल है?
लाखों परीक्षा
मदद ली जा
शिक्षा मंडल
का भविष्य
से घबरा गई
परिणाम को
विरोध जाता
परीक्षार्थियों
लीक और सं
विश्वसनीयता
में छात्रों और
सरकार सेना
को शांत क

सड़क हादसों के खिलाफ नीमच पुलिस की जंग

'जीवन संजीवनी मित्र अभियान' बना उम्मीद की नई किरण

22 ब्लैक स्पॉट्स पर जीवन बचाने की मुहिम : पुलिस, स्वास्थ्य विभाग और आमजन मिलकर लिख रहे संवेदनशील समाज की नई कहानी

गृह मंत्रालय ने सराहा नवाचार, एसपी राजेश व्यास की पहल प्रदेशभर में बनी मॉडल

नीमच। सड़क हादसे अक्सर परिवारों की खुशियां छीन लेते हैं, लेकिन नीमच पुलिस ने अब इन हादसों के खिलाफ सिर्फ कार्रवाई ही नहीं, बल्कि जीवन बचाने की एक ऐसी मुहिम शुरू की है जो पूरे प्रदेश में मिसाल बनती जा रही है। पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास के नेतृत्व में शुरू हुआ 'जीवन संजीवनी मित्र अभियान' सड़क सुरक्षा और मानवीय संवेदनाओं का अनूठा संगम बनकर उभरा है। इसकी सफलता और नवाचार को देखते हुए मध्यप्रदेश गृह मंत्रालय ने भी इस पहल की सराहना की है। जिले में चिन्हित 22 ब्लैक स्पॉट्स पर चल रहा यह अभियान केवल जागरूकता कार्यक्रम नहीं, बल्कि लोगों को जीवन रक्षक बनने का प्रशिक्षण देने वाला जनआंदोलन बन चुका है। पुलिस और स्वास्थ्य विभाग की संयुक्त टीम गांव-गांव, चौपाल-चौपाल पहुंचकर लोगों को दुर्घटनाओं की रोकथाम के साथ-साथ घायलों की जान बचाने के गुर सिखा रही है।

जहां हादसे होते थे, अब वहीं जीवन बचाने की सीख - नीमच जिले के उन स्थानों को चिन्हित किया गया है जहां सड़क दुर्घटनाओं की संभावना अधिक रहती है। इन ब्लैक स्पॉट्स पर नियमित चौपाल लगाकर ग्रामीणों, वाहन चालकों और स्थानीय नागरिकों को यातायात नियमों की जानकारी दी जा रही है। साथ ही यह भी बताया जा रहा है कि दुर्घटना होने पर घबराने के बजाय किस प्रकार तत्काल सहायता देकर किसी की जान बचाई जा सकती है।

सीपीआर सीख रहे लोग, बढ़ रही जीवन बचाने की क्षमता - अभियान का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि स्वास्थ्य विभाग की विशेषज्ञ टीम आमजन को सीपीआर (कार्डियो पल्मोनरी रिससिटेशन), प्राथमिक उपचार और 'गोल्डन ऑवर' की अहमियत समझा रही है। विशेषज्ञों का कहना है कि दुर्घटना के बाद शुरुआती कुछ मिनटों में दी गई सही सहायता कई बार मौत और जिंदगी के बीच का अंतर तय कर देती है।

अधिकारी खुद संभाल रहे मोर्चा - पुलिस अधीक्षक राजेश व्यास और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हेमलता अग्रवाल स्वयं विभिन्न ब्लैक स्पॉट्स पर पहुंचकर लोगों से संवाद कर रहे हैं। तीनों पुलिस अनुविभागों में एसडीओपी एवं सीएसपी स्तर के अधिकारियों को अभियान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। वहीं यातायात प्रभारी सोनू बड़गुर्जर अपनी टीम के साथ लगातार लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक कर रहे हैं।

'राहवीर' बनने का संदेश - अभियान के माध्यम से केंद्र सरकार की राहवीर योजना की जानकारी भी दी जा रही है। इसमें सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति की मदद करने वाले नागरिकों को सम्मान और प्रोत्साहन दिया जाता है। पुलिस का उद्देश्य है कि लोग कानूनी झंझटों के डर से पीछे न हटें, बल्कि आगे बढ़कर मानवता का परिचय दें।

नीमच बना प्रदेश के लिए मॉडल - जनभागीदारी, सड़क सुरक्षा और जीवन रक्षा को केंद्र में रखकर शुरू किया गया 'जीवन संजीवनी मित्र अभियान' अब एक प्रशासनिक पहल से आगे बढ़कर सामाजिक आंदोलन का रूप लेता दिखाई दे रहा है। सड़क हादसों में कमी लाने और घायलों को समय पर मदद दिलाने की दिशा में नीमच पुलिस का यह प्रयास प्रदेश के अन्य जिलों के लिए भी एक अनुकरणीय मॉडल बन रहा है।

सीएम हेल्पलाइन पर बड़ा सवाल : कार्रवाई नहीं, फिर भी समाधान का दावा, पेड़ कटाई और सरकारी जमीन मामला गरमाया

नीमच। आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए बनाई गई सीएम हेल्पलाइन की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े हो रहे हैं। मनीष चांदना ने आरोप लगाया है कि नगर पालिका के कुछ जिम्मेदार अधिकारी शिकायतों के वास्तविक निराकरण के बिना ही उन्हें पोर्टल पर बंद कर रहे हैं, जिससे लोगों का भरोसा व्यवस्था पर कमजोर पड़ रहा है। मामला न्यू इंदिरा नगर स्थित दीनदयाल वाटिका के सामने हरे-भरे नीम के पेड़ों की कटाई से जुड़ा है। शिकायत के अनुसार करीब तीन माह पहले चार से अधिक नीम के पेड़ों को गंभीर नुकसान पहुंचाया गया था। इस संबंध में सीएम हेल्पलाइन सहित संबंधित अधिकारियों को शिकायत दी गई, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई। इसके बावजूद शिकायत को निराकरण दर्शाने का दावा किया गया। स्थानीय रहवासियों का आरोप है कि एक निजी मल्टी परिसर के सामने का क्षेत्र खुला दिखाने के उद्देश्य से पेड़ों को नुकसान पहुंचाया गया। समय रहते हस्तक्षेप होने से कुछ पेड़ पूरी तरह नष्ट होने से बच गए और उनमें नई पत्तियां भी निकल आईं, लेकिन एक पेड़ पूरी तरह सूख चुका है, जिससे उसके गिरने का खतरा बना हुआ है। इसी तरह गणपति नगर स्थित करोड़ों रुपये मूल्य की शासकीय भूमि के सीमांकन और बाउंड्रीवाल निर्माण से जुड़ी शिकायत में भी सीएम हेल्पलाइन पर समाधान दर्शाया गया, जबकि मौके पर अब तक कोई कार्यवाही नजर नहीं आई।

मनीष चांदना का कहना है कि यदि शिकायतों के वास्तविक निराकरण के बिना उन्हें बंद किया जाता रहा तो सीएम हेल्पलाइन की विश्वसनीयता प्रभावित होगी। उन्होंने कलेक्टर से मामले की निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदार अधिकारियों और कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

पर्यावरण संरक्षण पर भी उठाए सवाल - चांदना ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के नाम पर अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन हरियाली को नुकसान पहुंचाने वालों पर कार्रवाई नहीं होना चिंताजनक है। उनका कहना है कि दोषियों पर कानूनी कार्रवाई होने तक उनका प्रयास और संघर्ष जारी रहेगा।

व्यवहार से ग्रहों की स्थितियां होती हैं प्रभावित

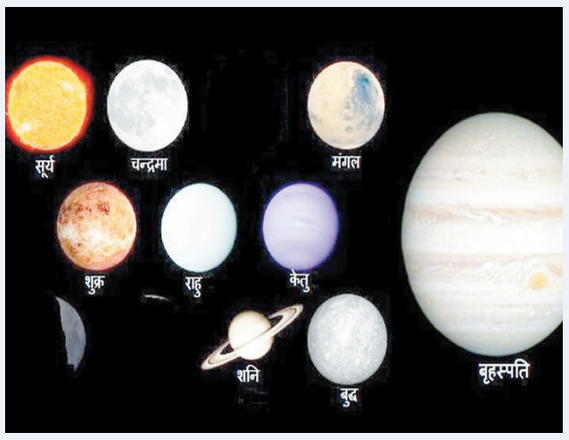

ग्रहों का व्यक्ति के जीवन के साथ-साथ व्यवहार पर भी सीधा प्रभाव पड़ता है। हमारा व्यवहार हमारे ग्रहों की स्थितियों से संबंध रखता है या हमारे व्यवहार से हमारे ग्रहों की स्थितियां प्रभावित होती हैं। अच्छा या बुरा व्यवहार सीधा हमारे ग्रहों को प्रभावित करता है। ग्रहों के कारण हमारे भाग्य पर भी इसका असर पड़ता है। कभी-कभी हमारे व्यवहार से हमारी किस्मत पूरी बदल सकती है।

वाणी-

वाणी का संबंध हमारे पारिवारिक जीवन और आर्थिक समृद्धि से होता है।

ख़राब वाणी से हमें जीवन में आर्थिक नुक्सान उठाना पड़ता है।

कभी-कभी आकस्मिक दुर्घटनाएं घट जाती हैं।

कभी-कभी कम उम्र में ही बड़ी बीमारी हो जाती है।

वाणी को अच्छा रखने के लिए सूर्य को जल देना लाभकारी होता है।

गायत्री मंत्र के जाप से भी शीघ्र फायदा होता है।

आचरण-कर्म

हमारे आचरण और कर्मों का संबंध हमारे रोजगार से है।

अगर कर्म और आचरण शुद्ध न हों तो रोजगार में समस्या होती है।

व्यक्ति जीवन भर भटकता रहता है।

साथ ही कभी भी स्थिर नहीं हो पाता।

आचरण जैसे-जैसे सुधरने लगता है, वैसे-वैसे रोजगार की समस्या दूर होती जाती है।

आचरण की शुद्धि के लिए प्रात: और सायंकाल ध्यान करें।

इसमें भी शिव जी की उपासना से अद्भुत लाभ होता है।

जिम्मेदारियों की अवहेलना

जिम्मेदारियों से हमारे जीवन की बाधाओं का संबंध होता है।

जो लोग अपनी जिम्मेदारियां ठीक से नहीं उठाते हैं उन्हें जीवन में बड़े संकटों, जैसे मुक़दमे और कर्ज का सामना करना पड़ता है।

व्यक्ति फिर अपनी समस्याओं में ही उलझ कर रह जाता है।

अपनी जिम्मेदारियों को निभाने में कोताही न करें।

एकादशी का व्रत रखने से यह भाव बेहतर होता है।

साथ ही पौधों में जल देने से भी लाभ होता है।

सहायता न करना-

अगर सक्षम होने के बावजूद आप किसी की सहायता नहीं करते हैं तो आपको जीवन में मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कभी न कभी आप जीवन में अकेलेपन के शिकार हो सकते हैं।

जितना लोगों की सहायता करेंगे, उतना ही आपको ईश्वर की कृपा का अनुभव होगा।

आप कभी भी मन से कमजोर नहीं होंगे।

दिन भर में कुछ समय ईमानदारी से ईश्वर के लिए जरूर निकालें।

इससे करुणा भाव प्रबल होगा, भाग्य चमक उठेगा।

वास्तु: इस दिशा में खुले तिजोरी तो होता है धन-लाभ

हर कोई घर में सुख-शांति और लक्ष्मी का वास चाहता है और इसके लिए लोग कई उपाय करते है। कुछ लोग पूजा-पाठ, हवन तो कुछ आपना घर वास्तु के अनुसार बनवाते हैं। वहीं वास्तु के अनुसार अगर आप घर में कुछ चीजें दिशा के अनुसार रखते हैं तो इसका भी असर आपके जीवन पर पड़ता है।

आइए जानते हैं वास्तु से जुड़ी कुछ बातें :

1. ड्रेसिंग टेबल के साथ दर्पण पूर्व या उत्तर की दीवारों पर होना चाहिए।

2. अलमारी शयन कक्ष के उत्तर पश्चिमी या दक्षिण की ओर होनी चाहिए। टीवी, हीटर और एयर कंडीशनर दक्षिण पूर्वी दिशा के कोने में स्थित होना चाहिए।

3. पढ़ने और लिखने की जगह पूर्व या शयन कक्ष के पश्चिम की ओर होनी चाहिए जबकि पढ़ाई करते समय मुंह पूर्व दिशा में होना चाहिए।

बेडरूम में सेफ या तिजोरी दक्षिण की दीवार के साथ रखनी चाहिए। खुलते समय उसका मुंह उत्तर की तरफ खुलना चाहिए। इससे धन में कमी नहीं आएगी।

4. दक्षिण-पश्चिम और पश्चिम कोना कभी खाली नहीं रखना चाहिए।

5. बेडरूम के साथ लगता बाथरूम, कमरे के पश्चिम या उत्तर में होना चाहिए।

6. सोते समय एक अच्छी नींद के लिए सिर पूर्व या दक्षिण की तरफ होना चाहिए।

मान्यता है कि भगवान गणेश के साथ-साथ सूर्य देव की उपासना करना बहुत फलदायी माना जाता है। इसलिए बप्पा के साथ ही सूर्य देव की भी उपासना करें।

भगवान गणेश के साथ-साथ सूर्य देव की उपासना करना बहुत फलदायी माना जाता है

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य देव को सभी ग्रहों का राजा माना जाता है। इसीलिए इसकी शुभ-अशुभ स्थिति व्यक्ति के जीवन पर बहुत गहरा प्रभाव डालती है। वास्तु शास्त्र के अनुसार सूर्य देव की अलग-अलग प्रतिमाएं रखना शुभ माना जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अपनी इच्छानुसार घर में सूर्य देव की प्रतिमाएं रखी जा सकती हैं। तो आइए आज जानते हैं कि सूर्य देव की कौन सी प्रतिमा को घर में रखा जा सकता है।

लकड़ी की प्रतिमा

ज्योतिष और वास्तु के अनुसार सूर्यदेव की लकड़ी की प्रतिमा घर रखना बहुत अच्छा माना जाता है। मान्यता है कि इसके निरंतर पूजा-पाठ करने से घर के लोगों का समाज में मान-सम्मान बढ़ता है। इसके साथ ही उन्हें भाग्य का साथ मिल जाता है।

मिट्टी की प्रतिमा

जिस जातक की कुंडली में सूर्य दोष हो और उसके सभी कामों में बार-बार बाधाएं आ रही हो तो वो इंसान घर में पत्थर या मिट्टी की सूर्य प्रतिमा रख सकता है। कहा जाता है कि इसकी पूजा करने से हर कार्य में सफलता मिलती है।

तांबे की प्रतिमा

कहते हैं कि घर में सकारात्मकता बनाए रखने के लिए हर किसी को तांबे से बनी प्रतिमा रखनी चाहिए। इसके शुभ असर से सभी परेशानियों से छुटकारा मिल सकता है।

चांदी की प्रतिमा

कार्य क्षेत्र में अधिकार बनाए रखने के लिए चांदी की सूर्य प्रतिमा रख सकते हैं।

सोने की प्रतिमा

सोने से बनी सूर्य प्रतिमा घर में रखने और उसकी पूजा करने से घर में धन-धान्य बढ़ता है, सुख-समृद्धि बनी रहती है।

भक्तों के पास रहते हैं भगवान

किसी भी वस्तु की चेतनता की पहचान इच्छा, क्रिया अथवा अनुभूति के होने से होती है। अगर किसी वस्तु में ये तीनों नहीं होते हैं, तो उसे जड़ वस्तु कहते हैं और इन तीनों के होने से उसे चेतन वस्तु कहते हैं। मनुष्य में इन तीनों गुणओं के होने से उसे चेतन कहते हैं। मनुष्य के मृत शरीर में इनके न होने से उसे अचेतन अथवा जड़ कहते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि जो मनुष्य अभी-अभी इच्छा, क्रिया अथवा अनुभूति कर रहा था और चेतन कहला रहा था, वही मनुष्य इनके न रहने से मृत क्यों घोषित कर दिया गया जबकि वह सशरीर हमारे सामने पड़ा हुआ है? आमतौर पर एक डॉक्टर बोलेगा कि इस शरीर में प्राण नहीं हैं। शास्त्रीय भाषा में, जब तक मानव शरीर में आत्मा रहती है, उसमें चेतनता रहती है। उसमें इच्छा, क्रिया व अनुभूति रहती है। आत्मा के चले जाने से वही मानव शरीर इच्छा, क्रिया व अनुभूति रहित हो जाता है, जिसे आमतौर पर मृत कहा जाता है।

शास्त्रों के अनुसार स्वरूप से आत्मा सच्चिदानन्दमय होती है। सच्चिदानन्द अर्थात सत्+चित्+आनंद। संस्कृत में सत् का अर्थ होता है नित्य जीवन अर्थात् वह जीवन जिसमें मृत्यु नहीं है, चित् का अर्थ होता है ज्ञान जिसमें कुछ भी अज्ञान नहीं है और आनंद का अर्थ होता है नित्य सुख जिसमें दु:ख का आभास मात्र नहीं है। यही कारण है कि कोई मनुष्य मरना नहीं चाहता, कोई मूर्ख नहीं कहलवाना चाहता और कोई भी किसी भी प्रकार का दु:ख नहीं चाहता।

अब नित्य जीवन, नित्य आनंद, नित्य ज्ञान कहां से मिलेगा? जैसे सोना पाने के लिए सुनार के पास जाना पड़ता है, लोहा पाने के लिए लोहार के पास, इसी प्रकार नित्य जीवन-ज्ञान-आनंद पाने के लिए भगवान के पास जाना पड़ेगा क्योंकि एकमात्र वही हैं जिनके पास ये तीनों वस्तुएं असीम मात्रा में हैं। प्रश्न हो सकता है कि बताओ भगवान मिलेंगे कहां? ये भी एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। कोई कहता है भगवान कण-कण में हैं, कोई कहता है कि भगवान मंदिर में हैं, कोई कहता है कि भगवान तो हृदय में हैं, कोई कहता है कि भगवान तो पर्वत की गुफा में, नदी में, प्रकृति में वगैरह।

वैसे जिस व्यक्ति के बारे में पता करना हो कि वह कहां रहता है, अगर वह स्वयं ही अपना पता बताए तो उससे बेहतर उत्तर कोई नहीं हो सकता। उक्त प्रश्न के उत्तर में भगवान कहते हैं कि मैं वहीं रहता हूं, जहां मेरा शुद्ध भक्त होता है। चूंकि हम सब के मूल में जो तीन इच्छाएं- नित्य जीवन, नित्य ज्ञान व नित्य आनंद हैं, वे केवल भगवान ही पूरी कर सकते हैं, कोई और नहीं। इसलिए हमें उन तक पहुंचने की चेष्टा तो करनी ही चाहिए।भगवान स्वयं बता रहे हैं कि वह अपने शुद्ध भक्त के पास रहते हैं। अत: हमें ज्यादा नहीं सोचना चाहिए और तुरंत ऐसे भक्त की खोज करनी चाहिए जिसके पास जाने से, जिसकी बात मानने से हमें भगवद्प्राप्ति का मार्ग मिल जाए। साथ ही हमें यह सावधानी भी बरतनी चाहिए कि कहीं वह भगवद्-भक्त के वेश में ढोंगी न हो। स्कंद पुराण के अनुसार भगवान शिव माता पार्वती से कहते हैं कि कलियुग में ऐसे गुरु बहुत मिलेंगे जो शिष्य का सब कुछ हर लेते हैं, परंतु शिष्य का संताप हर कर उसे सद्मार्ग पर ले आए ऐसा गुरु विरला ही मिलेगा।

हर समय महसूस होती है उदासी तो आजमाएं ये अचूक वास्तु टिप्स, बढ़ेगी पॉजिटिविटी

कई बार बाहर आते-जाते समय या फिर सबसे साथ होते हुए हमें ऐसा महसूस होता है, जैसे हम अकेले और बेबस हैं। कई बार बिना कारण रोने का मन करता है। ऐसे में अगर आप भी हर समय उदासी महसूस करते हैं, तो आप कुछ आसान वास्तु उपाय आजमाकर इस निगेटिविटी को दूर कर सकते हैं।

आजकल की भागदौड़ भरी जिंदगी में अक्सर लोगों को बिना किसी खास कारण के बेचैनी, उदासी और तनाव महसूस होने लगता है। यह कई बार हमारे आसपास मौजूद निगेटिव एनर्जी की वजह से होता है। जिसको वास्तु शास्त्र में 'वास्तु दोष' कहा जाता है। वास्तु के मुताबिक हमारे घर की बनावट, रंगों का चुनाव और वस्तुओं की दिशा सीधे तौर पर हमारी मानसिक शांति और भावनाओं को प्रभावित करने का काम करता है।

कई बार बाहर आते-जाते समय या फिर सबसे साथ होते हुए हमें ऐसा महसूस होता है, जैसे हम अकेले और बेबस हैं। कई बार बिना कारण रोने का मन करता है। ऐसे में अगर आप भी हर समय उदासी महसूस करते हैं, तो आप कुछ आसान वास्तु उपाय आजमाकर इस निगेटिविटी को दूर कर सकते हैं।

ऐसे दूर करें हर समय की उदासी

घर की दीवारों पर नीरस और गहरे

रंग जैसे काला और भूरे रंग की बजाय हल्के और शांतिपूर्ण रंग जैसे हल्का हरा, हल्का नीला, पीला या क्रीम करवाएं। इन रंगों को सिर्फ अपने घर की दीवारों तक ही सीमित न रखें, बल्कि आप खुद भी इस तरह के रंगों के कपड़े अधिक से अधिक पहनें।

शुरूआत में हो सकता है कि आपको लगे कि यह कौन सा तरीका हुआ उदासी को दूर करने का। लेकिन यकीन मानिए कि आपको धीरे-धीरे बदलाव खुद महसूस होने लगेगा। इन चीजों को शुभ प्रभाव आप पर पड़ रहा है और आप सकारात्मकता की तरफ बढ़ रहे हैं।

हर समय की उदासी को मिटाने के लिए घर के खिड़की-दरवाजों को नियमित रूप से खोलें। जिससे कि ताजी हवा और प्राकृतिक रोशनी अंदर आ सके। सूर्य की रोशनी पॉजिटिव एनर्जी का सबसे बड़ा स्त्रोत है। वहीं अंधेरा उदासी और नकारात्मकता को बढ़ाता है।

वहीं शाम के समय पूरे घर में सुगंधित धूप या अगरबत्ती जलाएं। या फिर चंदन या लैवेंडर की खुशबू का उपयोग करें। इससे घर का वातावरण भी शुद्ध होता है और मन को शांति मिलती है। सोते समय हमेशा अपना सिर पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर रखें।

वास्तु शास्त्र के मुताबिक उत्तर दिशा में सिर करके सोने से नींद की समस्याएं और तनाव बढ़ सकता है। अपने बेडरूम में इस बात का ध्यान रखें कि सोते समय शीशे में आपका प्रतिबिंब न दिखें। अगर शीशा ऐसी जगह पर है, तो रात में इसको पर्दे से ढक दें।

बेडरूम में आमने-सामने दो शीशें लगाने से भी तनाव बढ़ता है। वहीं अगर बिस्तर के ठीक ऊपर कोई बीम है, तो वहां से बिस्तर हटा लें। या फिर बीम को फॉल्स सीलिंग से ढक लें। बीम के नीचे सोने से मानसिक दबाव बढ़ता है।

इसके अलावा घर में कहीं भी धूल, कचरा या मकड़ी के जाले न जमने दें। खासकर घर के कोनों में अच्छे से सफाई करें। घर की गंदगी निगेटिविटी और मानसिक बोझ को बढ़ाता है। घर से टूटी हुई या दरार आई हुई चीजों को हटा दें। टूटी या दरार आई हुई चीजें नकारात्मकता लाती हैं, जोकि रिश्ते में तनाव व कलह का कारण बनती हैं। घर के पूर्व-उत्तर कोने को हमेशा साफ, हल्का और खाली रखें। क्योंकि यह दिशा शांति और मानसिक स्पष्टता से जुड़ी है। इसलिए इस दिशा में भारी सामान रखने से बचना चाहिए।

मानसिक तनाव को कम करने के लिए घर के ईशान कोण में किसी बड़े पात्र में साफ जल भरकर रखें। या फिर इस जगह एक छोटा सा पानी का फाउंटेन लगाएं।

एकादशी के दिन तुलसी तोड़ना चाहिए या नहीं?

अक्सर लोगों के मन में यह प्रश्न उठता है कि क्या एकादशी के दिन तुलसी जी को स्पर्श करना या उन्हें जल अर्पित करना शुभ होता है या अशुभ। इस विषय को लेकर कई तरह की मान्यताएं प्रचलित हैं, जिनके कारण लोग भ्रम में पड़ जाते हैं। आइए आपको बताते हैं प्रेमानंद महाराज ने इस पर क्या बताया है। हिंदू धर्म में तुलसी पौधा को पूजनीय माना गया है। हर घर में तुलसी मां की पूजा जरुर की जाती है। तुलसी का पौधा आध्यात्मिक और धार्मिक दृष्टि से पूजनीय है। माता लक्ष्मी का स्वरुप है तुलसी जी। तुलसी की पूजा करने बेहद पुण्यदायक माना जाता है। सनातन धर्म में पूजा पाठ को लेकर कई नियम बताएं है। ऐसे में मां तुलसी की पूजा करने के कुछ जरुरी नियम है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, कई घरों में एकादशी के दिन तुलसी की पत्तियां नहीं तोड़ी जाती है। इसके अलावा तुलसी के पौधे को जल देना शुभ नहीं होता है। आपके मन में भी अक्सर सवाल जरुर आता होगा कि एकादशी के दिन तुलसी जी को स्पर्श करना या जल चढ़ाना शुभ माना जाता है या अशुभ।

तुलसी की पूजा क्यों जरुरी है?

तुलसी जी की पूजा, दर्शन और सेवा करने से सभी प्रकार के पापों का नाश होता है। तुलसी की मंजरी को भगवान के चरणों में अर्पित करने वाला व्यक्ति, चाहे वह कितना भी दोषयुक्त क्यों न हो, यमपुरी का भय कभी महसूस नहीं करता। घर में तुलसी का पौधा लगाने से श्राद्ध कर्म करने जितना कल्याण होता है और पितर भी तृप्त होते हैं।

नीमच में डाक फ्रेंचाइजी खोलने का मौका, 22 जून तक कर सकेंगे आवेदन

स्पीड पोस्ट, पार्सल बुकिंग, डाक टिकट बिक्री समेत कई सेवाएं मिलेंगी

नीमच। भारतीय डाक विभाग ने डाक सेवाओं के विस्तार और आमजन तक सुविधाएं पहुंचाने के उद्देश्य से मंदसौर एवं नीमच जिले में डाक फ्रेंचाइजी आउटलेट खोलने के लिए इच्छुक व्यक्तियों और संस्थाओं से आवेदन आमंत्रित किए हैं। आवेदन की अंतिम तिथि 22 जून 2026 निर्धारित की गई है। अधीक्षक डाकघर, मंदसौर कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार फ्रेंचाइजी योजना के तहत चयनित संचालकों को डाक विभाग की विभिन्न काउंटर सेवाएं उपलब्ध कराने का अवसर मिलेगा। हालांकि डाक सामग्री का वितरण एवं संप्रेषण कार्य विभाग द्वारा ही किया जाता रहेगा। फ्रेंचाइजी आउटलेट पर डाक टिकट एवं डाक स्टेशनरी की बिक्री, स्पीड पोस्ट और पार्सल बुकिंग, मनीऑर्डर बुकिंग तथा पोस्टल लाइफ इंश्योरेंस (पीएलआई) के प्रीमियम संग्रहण जैसी सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इसके अलावा पीएलआई से जुड़ी आफ्टर सेल सेवाएं भी प्रदान की जा सकेंगी। डाक विभाग के अनुसार कोई भी एकल स्वामित्व, साझेदारी फर्म, एलएलपी या कंपनी, जो भारत में विधिवत पंजीकृत हो, आवेदन कर सकती है।

आवेदक के पास उपयुक्त कार्यस्थल, कंप्यूटर संचालन का सामान्य ज्ञान तथा ग्राहकों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने की क्षमता होना आवश्यक है। इच्छुक व्यक्ति एवं संस्थाएं 22 जून तक निर्धारित प्रारूप में आवेदन जमा कर सकते हैं। योजना की विस्तृत जानकारी और आवेदन पत्र अधीक्षक डाकघर, मंदसौर कार्यालय से प्राप्त किए जा सकते हैं।

एक माह में पूरे होंगे 1250 पीएम आवास, 15 जुलाई तक 300 मुद्रा लोन बांटने का लक्ष्य

नीमच। कलेक्टर हिमांशु चंद्रा ने पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की समीक्षा बैठक में विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को तय समयसीमा में लक्ष्य हासिल करने के निर्देश दिए। बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण), राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मनरेगा, स्वच्छ भारत मिशन और जल संरक्षण से जुड़े कार्यों पर विशेष फोकस किया गया।

कलेक्टर ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत अगले एक माह में जिले में 1250 आवास पूर्ण करने का लक्ष्य तय किया गया है। इसमें जनपद पंचायत जावद में 700, मनासा में 350 और नीमच में 200 आवास शामिल हैं। वर्ष 2025-26 की शेष स्वीकृतियां एक सप्ताह में पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। जावद जनपद में कम प्रगति पर नाराजगी जताते हुए सुधार नहीं होने पर कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) के तहत स्व-सहायता समूहों के बैंक लिंकेज प्रकरण 10 दिन में बैंकों को भेजकर 15 जुलाई तक 50 प्रतिशत ऋण वितरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। वहीं प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत 300 हितग्राहियों को ऋण उपलब्ध कराने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। लखपति दीदी योजना से जुड़ी सभी प्रविष्टियां सात दिन में पोर्टल पर दर्ज करने को कहा गया।

बैठक में जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत अमृत सरोवर, खेत तालाब, डगवेल रिचार्ज और गाद निकासी कार्यों की सफलता की कहानियां तैयार करने के निर्देश दिए गए। सभी पूर्ण कार्यों की जियो टैगिंग 30 जून तक कराने और 'एक बगिया मां के नाम' योजना के हितग्राहियों के भुगतान को प्राथमिकता देने पर जोर दिया गया।

स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) के तहत हाईवे से लगी पंचायतों में विशेष अभियान चलाकर सड़क किनारे कचरा फेंकने पर रोक लगाने, ढाबों और दुकानों पर डस्टबिन की व्यवस्था कराने तथा जन जागरूकता बढ़ाने के निर्देश दिए गए। बैठक में जलग्रहण परियोजनाओं और तालाबों के पिचिंग कार्य 30 जून तक गुणवत्ता के साथ पूर्ण करने के निर्देश भी दिए गए। ग्राम पंचायतों में ऑनलाइन कर संग्रहण व्यवस्था के प्रचार-प्रसार तथा महिला स्व-सहायता समूहों की भागीदारी बढ़ाने पर भी जोर दिया गया। बैठक में जिला पंचायत सीईओ अमन वैष्णव सहित तीनों जनपद पंचायतों के सीईओ, सहायक यंत्री, ब्लॉक समन्वयक एवं अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

16 जून से 15 अगस्त तक मछली पकड़ने पर रोक, उल्लंघन पर जेल और जुर्माने का प्रावधान

नीमच। मत्स्य प्रजनन काल को देखते हुए मध्यप्रदेश शासन ने 16 जून से 15 अगस्त 2026 तक की अवधि को बंद ऋतु घोषित किया है। इस दौरान जिले की सभी नदियों और जलाशयों में मछली पकड़ने, बेचने, खरीद-फरोख्त करने तथा परिवहन करने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। मत्स्य विभाग द्वारा जारी जानकारी के अनुसार म.प्र. नदीय मत्स्योद्योग नियम 1972 के तहत यह प्रतिबंध लगाया गया है। बंद ऋतु के दौरान मत्स्य संसाधनों के संरक्षण और प्रजनन को बढ़ावा देने के लिए किसी भी प्रकार की मत्स्य गतिविधि की अनुमति नहीं होगी। विभाग ने स्पष्ट किया है कि केवल ऐसे छोटे तालाब और जल स्त्रोत, जिनका किसी नदी से कोई संबंध नहीं है और जो निर्दिष्ट जल की श्रेणी में नहीं आते, उन्हें इस प्रतिबंध से छूट रहेगी। इसके अलावा सभी नदियों एवं जलाशयों में नियम लागू रहेंगे। नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ मप्र. मत्स्य क्षेत्र संशोधन अधिनियम 1981 के तहत कार्रवाई की जाएगी। दोषी पाए जाने पर एक वर्ष तक की जेल, पांच हजार रुपए तक का जुर्माना या दोनों दंड दिए जा सकते हैं। मत्स्य विभाग ने आमजन से अपील की है कि बंद ऋतु के दौरान न तो स्वयं मछली पकड़ें, बेचें या परिवहन करें और न ही किसी अन्य व्यक्ति को इसमें सहयोग दें। विभाग ने चेतावनी दी है कि नियमों की अनदेखी करने वालों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

जिले में 17 जून से चलेगा संयुक्त सघन टीकाकरण अभियान

नीमच । कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभाकक्ष नीमच में स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित सघन टीकाकरण एवं मातृ-शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम की प्रगति की सेक्टरवार विस्तार से समीक्षा की गई। बैठक में जिला पंचायत सीईओ श्री अमन वैष्णव, सभी एसडीएम, जनपद सीईओ, सभी सीडीपीओ, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.दिनेश प्रसाद, जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ.मनीष यादव एवं डॉ.एस.एल.पाटीदार सहित सभी बीएमओ उपस्थित थे।

21 जून को होने वाली NEET पुनः परीक्षा की तैयारियां पूर्ण

नीमच । राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा(NEET-UG) 2026 का आयोजन रविवार, 21 जून 2026 को दोपहर 02:00 बजे से सायं 05:15 बजे तक जिले के दो परीक्षा केंद्रों पर निर्धारित समयानुसार किया जाएगा। परीक्षा केन्द्र श्री सीताराम जाजू कन्या महाविद्यालय, नीमच में 456 परीक्षार्थी ,दोपहर 02:00 से सायं 05:15 बजे तक परीक्षा में शामिल होंगे। स्वामी विवेकानंद पी.जी. कॉलेज नीमच,में 470 परीक्षार्थी दोपहर 02:00 से सायं 05:15 बजे तक इस तरह कुल 926 परीक्षार्थी इस परीक्षा में शामिल होंगे। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा के निर्देशन में नीट परीक्षा की सभी आवश्यक प्रशासनिक तैयारी पूरी कर ली गई है। कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने अधिकारियों की बैठक में मंगलवार को तैयारियों की समीक्षा की। बैठक में एसपी श्री राजेश व्यास, एडीएम श्री बीएस कलेश, केंद्राध्यक्ष डॉ.प्रशांत मिश्रा, श्री रामकुमार पेसिया, नगर समन्वयक श्री प्रियदर्शन गर्ग, सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक ऐश्वर्य शर्मा के लिए माँ भगवती प्रिन्टर्स बंगला नं. 23, आईडीबीआई बैंक के सामने, नीमच, जिला-नीमच, मध्यप्रदेश से मुदित एवं प्रकाशित। सम्पर्क: 9407423966। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र नीमच होगा।